राग विस्तार का आधार – 'बंदिश'

डॉ० गुरदयाल सिंह
असि० प्रोफ्रेसर
संगीत विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

संक्षेपिका

बंदिश राग पर आधारित ऐसी कलाकृति है जो राग की समस्त विशेषताओं को अपने में समेट कर व्यक्त कर देती है। राग लक्षणों से युक्त बंदिश वादी–सँवादी, वर्ज्य–स्वर, न्यास स्वर इत्यादि राग–लक्षणों से परिपूर्ण रहते हुए, उसमें आविर्भाव तिरोभाव के माध्यम से सम्भावित राग–हानि से मुक्त रह, राग के आकृति–बंध की स्थापना कर, सौंदर्याविष्कार के उस चरम बिंदु को प्राप्त करती है जहाँ पहुँच वह बंदिश ही राग की पहचान का आधार बन जाती है। राग विस्तार करने हेतु बन्दिश मार्गदर्शक का भी कार्य करती है। एक–एक बन्दिश के अन्तर्गत राग का संपूर्ण शास्त्र समाहित है, जो गेय स्वरुप में जल्द ही कंठस्थ हो जाता है। इस प्रकार बंदिश वह सेतु है जिससे राग–प्रदर्शन में राग–सागर पार करना सरल हो जाता है।

'राग' भारतीय संगीत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसे भारतीय संगीत का मूलभूत या केन्द्रीय तत्त्व भी कह सकते हैं। सम्पूर्ण भारतीय संगीत चाहे वे शास्त्रीय संगीत हो या उपशास्त्रीय संगीत या फिर सुगम संगीत, राग की कल्पना के बिना ये सभी अस्तित्वहीन हैं। परन्तु राग से मनुष्य को ब्रह्मानन्द की प्राप्ति तभी होती है या मनुष्य आनन्द से अभिभूत तभी होता है जब 'राग'–बंदिश से मिलकर रस को मूर्त रूप दे देता है। राग में रंजकता भी तब आती है जब मधुर स्वरों में राग के अनुरूप बंदिश गायी जाए। भारतीय संगीत सम्पूर्ण रूप से राग की कल्पना पर आधारित होता है और राग 'बन्दिश' द्वारा निमित्त कल्पना पर आधरित होता है। राग की बढ़त भी बंदिश द्वारा ही सम्भव है। बन्दिश शब्द का प्रयोग मुख्यतः रागाश्रित शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत की रचनाओं के लिए प्रायः विद्वानों द्वारा होता है। वस्तुतः राग के स्वरूप के मुख्य चलन को तीनों सप्तकों में भिन्न–भिन्न सांगीतिक अवयवों के प्रयोग द्वारा राग के विस्तार को प्रबलता प्रदान करते हुए विशिष्ट भाव प्रदर्शन एवं सौन्दर्य आदि गुणों को शब्द, स्वर, लय–ताल के द्वारा गीत या गत के रूप में बांधने को बन्दिश कहा गया है। इस प्रकार राग का सम्पूर्ण अस्तित्व बन्दिश में बंधा होता है।

ग्वालियर घराने के विशिष्ट प्रतिनिधि 'श्री लक्षमण कृष्ण राव पंडित' बंदिश को राग विस्तार का आधार मानते हुए कहते हैं, ''बन्दिश राग का परिधान है, अगर बिना परिधान के राग को प्रस्तुत किया जाएगा तो वह महत्त्वहीन हो जाएगा, अतः राग का विस्तार असम्भव हो जाएगा और जहां तक बंदिश की महत्ता का प्रश्न है, बदिशों में राग छिपे होते हैं। एक राग में जितनी बंदिशें सीखी जाएंगी उतने ही

प्रकार से राग को प्रस्तुत करने का तरीका मालूम होगा और उसके मुख्य घटक स्थल तथा अवयवों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।''[1]

बन्दिश राग की आकृति का दर्पण है, जिसमें राग के स्वरूप और चलन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बन्दिशों के द्वारा राग के अंतः स्वरूप को एक सुनिश्चित रूप मिलता है, यानी उसकी आकृति स्पष्ट रूप से सामने आती है। अनेक बन्दिशों द्वारा राग के विविध प्रकार से चलन की जानकारी भी होती है।[2]

पं. एस. एन. रातंजनकर के मतानुसार, '' जिसके पास चीजें यानि बंदिश या प्रबन्ध के प्रकारों का भण्डार सबसे अधिक है वही सबसे अधिक कुशल विस्तारकर्त्ता गायक हो सकता है। जिसके पास यह भण्डार है उसका अनुभव एवं कल्पना शक्ति अन्य गायकों से अधिक हो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। ऐसे लोग राग के स्वभाव, को चीज़ की गायकी को और उसमें प्रदर्शित मनोभावों को समझते हुए ही राग की बढ़त करते हैं। इन चीज़ों का भण्डार होने से निरक्षर हो, शास्त्र का एक शब्द भी न जानता हो ऐसा गायक भी राग श्रृंगार उसके शुद्ध स्वरूप के साथ भली–भांति कर सकता है एवं राग में जितने अधिक विविध प्रकार के गीत कण्ठस्थ हों उतना ही अधिक अधिकार राग पर प्राप्त होता है।''[3]

स्वर्गीय कुमार गन्धर्व जी राग तथा बन्दिश का परस्पर सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं, '' मूलतः अरूप रहने वाला राग बन्दिश के कारण साकार हो जाता है। राग आत्मा है तो बन्दिश शरीर। शरीर का आकार तो सर्वत्र एक ही नहीं हो सकता। इसी तरह बन्दिशें भी एक ही प्रकार की नहीं हो सकती। वे विभिन्न प्रकार की होती हैं। इसलिए विभिन्न बन्दिशों के आधर पर विभिन्न स्वरूपों में राग प्रस्तुत किए जाते हैं।''[4]

श्री विमल मुखर्जी का कथन है, ^^Raga music definitely developed first in bandishes with simplistic swar vistar to start with. It was at a much later point of time that raga auchar and abstract raga alapa came it to vogue. The bandish has, therefore, been the focal point of raga music development. A bandish let us remember, is just not simple 'song or Gat'. It represents many intricate things besides a reflection of the raga mood. In the first place, it has a rigorous fixity - It is always the same in minutes details when sung or played - thereby representing music discipline of raga."[5]

डॉ. सुलभा ठकार के अनुसार, ''कलाकार जो कलाकृति का निर्माण करता है वह बंदिश के आधार पर ही करता है। चित्र में जो बॉर्डर का महत्त्व है वही गायन में बंदिश का होता है। राग के लिए आवश्यक है शुद्ध, विकृत, आरोह–अवरोह, वादी–सम्वादी, अल्पत्व, चलन, पकड़ आदि तत्त्व और इन तत्त्वों का निर्देशन बंदिश में होता है।''[6]

इस सम्बन्ध में हफीज़ अहमद साहिब के मत कुछ इस प्रकार हैं, ''बंदिश राग की outline होती है, जिससे राग का ख़ाका और गायक का कदम कभी नहीं लड़खड़ाता।''[7]

पं. सुदर्शनाचार्य ने उस्ताद रहीमसेन तथा उस्ताद अमृत सेन जी की गत बन्दिशों के विषय में विशेष रूप से इस प्रकार उल्लेख किया है, ''जिस राग की मियां रहीम सेन व अमृत सेन जी की बनाई गत याद हो, उस राग का ऐसा ज्ञान (साक्षात्कार) हो जाता है कि उस राग में चलना–फिरना सहज हो जाता है।''[8]

श्री रमनलाल सी. मेहता ने बन्दिश एवं राग की व्याख्या कुछ इस प्रकार की है, ''बन्दिश राग की एक विशिष्ट आकृति है। नई–नई आकृति का सौन्दर्य पाने के लिए या एक ही राग की कई शक्लें या रूप दिखाने का यह एक अच्छा तरीका है, तदुपरान्त हर बंदिश का एक मिज़ाज़ रहता है जो साहित्य के नव रसों या संचारी आदि भावों की परिभाषा से नहीं समझाया जा सकता। इस मिज़ाज़ को समझकर जब बन्दिश पेश की जाती है तब इस आकृति का सौन्दर्य खिल उठता है। ताल के हिस्से और ताल के अन्तर्गत जो वज़न होते हैं इनका चीज़ की बन्दिश के साथ पूरा सम्बन्ध रहता है और इस प्रकार बन्दिश की उत्तमता का वह लक्षण भी बन जाता है। राग स्वर सयोजनों का एक सुन्दर अद्‌भुत रूप है। राग तो अरूप है चीज़ ही उसको मूर्तिरूप करती है। चीज़ में पहलुओं राग भरा हुआ है और बन्दिश में राग बँधा हुआ पड़ा है, इसको छुड़ाना की राग विस्तार है।''[9]

स्व. मुश्ताक हुसैन ख़ां का बन्दिश के सन्दर्भ मे मत इस प्रकार है, ''किसी भी राग की बन्दिश को सही रूप से अपने ज़हन में उतार लो और उसी बंदिश के स्वरों के चलन के हिसाब से राग की बढ़त शुरू कर दो अर्थात् बंदिश के इर्द–गिर्द चलने से स्वंय ही राग का ढांचा मालूम हो जाएगा। इसका मुख्य कारण केवल बंदिश है।''[10]

पण्डित अमरनाथ जी के मतानुसार, '' वस्तुतः राग एक सांगीतिक है और बन्दिश का उसमें वही महत्त्व है, जैसे किसी ड्रामे में मुख्य पात्रा का होना। अतः राग तो ढाँचा मात्रा है, उसमें हम कैसे भी बोल बाँध दें तो ध्रुपद के अतिप्रधान बोल हो या ख़्याल की बन्दिश हो। कुछ भी राग रूपी ढाँचे में रोपा जा सकता है। ये उस राग के स्वरूप पर निर्भर करता है कि उसमें किस प्रकार के बोल रूचिकर लगेंगे। ध्रुपद में गम्भीर शान्त भक्तिप्रधन बोल हों या ख़्याल के श्रृंगारिक चपल बोल। अतः बन्दिश यानि जो राग–ताल में बंधी शब्द रचना हो वही बन्दिश है। जहाँ बंदिश राग की भाषा है वहीं वह राग को कलात्मक, लयात्मक रूप भी प्रदान करती है जो भावों और रस की सृष्टि में विचित्र सहयोग प्रदान करते हैं। बंदिश रागिक स्वरों को एक विशेष रंग, रस और भाव से समन्वित करती है उसमें शब्दों के माध्यम से अधिक विभिन्नता दिखा सकते हैं।''[11]

गीत, चीज़ या बन्दिश में सबसे प्रधान स्थाई और उसमें भी प्रधान आरम्भ की पंक्ति या मुखड़ा होता है। आरम्भ की पंक्ति ऐसी रखी जाती है जो सारे गीत में सबसे अधिक आकर्षण तथा राग को स्पष्ट करने वाली होती है। बन्दिश व राग का स्थाई भाव बढ़ाकर उसी को शब्दों व स्वरों द्वारा अन्तरे में सजाया जाता है। इस प्रकार एक बन्दिश में एक स्थाई भाव ही होता है और उसी को अन्तरे में

सजाया जाता है। स्थाई व अन्तरे का सामंजस्य व समन्वय अत्यन्त आवश्यक होता है और तभी सारी बन्दिश एक होमोजेनियस आरकैनिज्म की भाँति निर्मित होती है।[12]

बन्दिशों के आन्तरिक कायदे–गायक गाते समय बन्दिश के रूप में राग के ग्रह स्वर, वर्ज्य स्वर, विशेष स्वर संगीत इत्यादि दस लक्षणों को ध्यान में रखकर ही गाता है। अपनी कल्पनानुसार वह छोटी–छोटी आकृतियाँ बनाकर एक मध्य आकृति निर्माण करता है। गायक राग विस्तार करते करते स्वंय भी आनन्द लेता है और श्रोताओं को भी आनन्द की प्रतीति करवाता है। इस सारी क्रिया में वह स्वंय की मनोदशा शान्त स्थिर लेकिन उत्साहपूर्ण बनाए रखता है और उसे वैसी रखने पर ही उसका ध्यान उस राग एवं रचना के सौन्दर्य स्थलों पर केन्द्रित हो जाता है।[13]

राग के स्वरों में निरंतर उलझी रहने वाली बन्दिश राग का मूर्त स्वरूप होती है। राग के स्वरों को बहुत कुछ कहना पड़ता है। बन्दिश की मदद से कलाकार राग में छिपा हुआ भावाविष्कार करता रहता है। वादी–संवादी स्वरों की मदद से, स्वरों के छायाप्रकाश को चतुराई से, बुद्धिकौशल्य से दिखाते समय उसका झुकाव रागांग के महत्त्व को बनाए रखने का भी होता है। रागाविष्कार में बन्दिश के अंग से उपज होती है, राग की व्यवस्थित प्रस्तुति हेतु अलग अलग उठान वाले रागों की बन्दिशों का भी संग्रह रखना पड़ता है।[14]

रेणु गुप्ता के अनुसार, ''बंदिश की विभिन्न शैलियां भी राग विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। बंदिश राग की संगीतात्मक सीमाएं तथा उनकी भावनात्मक संभावनाएं अंकित करती है। बंदिश द्वारा विशिष्ट रस की निष्पत्ति होती है। स्वंय राग तो आनन्द स्वरूप है ही, लेकिन उस आनन्द में भी विशेष रस का होना, बंदिश के माध्यम से ही सिद्ध होता है तभी तो हमें एक ही राग में विभिन्न रसों की बन्दिशें दिखाई देती हैं। प्राचीन गायन शैली के अवशेष ध्रुपद को ही लें। दरबारी ध्रुपद गायकों की रचनाओं में वीरता और शहंशाह की प्रशंसा मिलती है। जो वीर रस को उद्भूत करने वाली हैं और उन्हीं रागों में भगवान के भक्तों द्वारा रची गई भक्ति तथा शांत रस से समन्वित रचनाएं मिलती हैं। अतः बन्दिश के माध्यम से तत्कालीन संस्कृति का भी दर्शन प्राप्त होता है।[15]

अतः बन्दिश को हम राग का दर्पण भी कह सकते हैं। जिसके माध्यम से राग के स्वरूप, उसके चलन तथा विभिन्न गायकियों की शक्ल को साकार रूप में स्पष्ट देखा जा सकता है। बंदिश के द्वारा राग के अन्तः स्वरूप को एक सुनिश्चित रूप मिलता है या ऐसा कहा जा सकता है कि उसकी आकृति स्पष्ट रूप से सामने आती है तथा बंदिश राग की सीमाएँ तथा भावनात्मक सम्भावनाएँ अंकित करती है।

संदर्भ

1. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी, हिन्दुस्तानी संगीत के महान् रचनाकार सदारंग–अदारंग, पृ० 85
2. धर्मपाल, किराना घराने की गायकी एवं बन्दिशों का मूल्यांकन, पृ० 148
3. रेणु गुप्ता, बंदिश– राग का एक अनिवार्य तत्त्व, संगीत कला विहार, अगस्त–1991,अंक–8, पृ० 19
4. मो. वि. भाटवडेकर, कुमार गंधर्व जी के सांगीतिक विचार, संगीत कला विहार, (पत्रिका), अप्रैल 1991, पृ० 52,53
5. Bimal Mukherjee, Perspectives on Composition in Indian Music - The Place of Composition or "Bandish" in Raga Music, Page 12
6. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी, हिन्दुस्तानी संगीत के महान् रचनाकार सदारंग–अदारंग, पृ० 85
7. वही
8. पं. सुदर्शनाचार्य शास्त्री, संगीत सुदर्शन, पृ० 52
9. आर. सी. मेहता, आगरा–परम्परा, गायकी और चीज़ें, पृ० 43
10. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी, हिन्दुस्तानी संगीत के महान् रचनाकार सदारंग–अदारंग, पृ० 84
11. रेणु गुप्ता, बंदिश–राग का एक अनिवार्य तत्व, संगीत कला विहार (पत्रिका), अगस्त 1991, अंक 8, पृ० 19
12. ए. सी. चौबे, वाद्य प्रबन्ध में रचनात्मक सौन्दर्य, पृ० 76,77
13. वा. ह. देशपांडे, घरानेदार गायकी, पृ० 49
14. श्रीमती माधवी नानल द्वारा प्रस्तुत व्यारव्यान प्रदर्शन– परमोच्च स्वर–शिल्प का माध्यम बन्दिशें, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, 7 अक्तूबर, 2014
15. रेणु गुप्ता, बंदिश–राग का एक अनिवार्य तत्व, संगीत कला विहार(पत्रिका), अगस्त 1991, पृ० 20